धूमिल की पटकथा: लोकतंत्र की विडंबना और जनचेतना का दस्तावेज

डॉ. मुक्तारानी कंचकार
एम.ए., पी- एच.डी., नेट, सेट हिंदी
व्याख्याता - वीरांगना रानी दुर्गावती शासकीय महाविद्यालय मरवाही जिला -जी.पी.एम.(छ.ग.)

सारांश –
धूमिल ने पटकथा कविता के माध्यम से स्वाधीनता आंदोलन के आदर्शों से मोहभंग को बताया है जैसे कि आजादी शब्द सुनकर समाज में ऊर्जा और उत्साह की लहर दौड़ जाती थी परंतु राजनीति की अलग-अलग सच्चाइयों के सामने आने से जनतंत्र,त्याग,स्वतंत्रता, संस्कृति, शांति, मानवता जैसे शब्द खोखले लगने लगे। राजनीति में एकरूपता, झूठी प्रतिज्ञाएं, सात्विकता की आड़ में छल - कपट निराशा की चरम सीमा तक पहुंच चुकी है,और कहा भी जा सकता है कि पटकथा एक यथार्थवादी , जनवादी और राजनीतिक कविता है जिसमें व्यंग और आक्रोश की तीव्रता है। इस कविता में सत्ता और व्यवस्था का खोखलापन बताया गया है जनता की स्थिति और व्यवस्था का खोखलापन बताया गया है जनता की स्थिति और शोषण तथा आम जनता का आक्रोश और प्रतिरोध को चित्रित किया गया है। पटकथा - कविता आजादी के बाद के भारत की राजनीति और सामाजिक वास्तविकता पर एक व्यंग है जहां स्वतंत्रता के आदर्शों का विश्वासघात हुआ।यह कविता नेताओं के खोखले वादों और आम जनता के मोहभंग को दर्शाती है। कविता के माध्यम से कवि ने ग्रामीण संवेदना और शहरी बौद्धिकता के रचनात्मक तनाव को दिखाया है जो व्यवस्था की विसंगतियों, शोषण और आम आदमी के दुखों को उजागर करती है, जिसके कारण एक गहरी उदासी और व्यवस्था के प्रति मोहभंग की भावना जाग्रत होती है।

बीज शब्द- धूमिल, पटकथा, लोकतंत्र, सत्ता, जनता, भूख।

प्रस्तावना - धूमिल को हिंदी कविता का जनकवि कहा जाता है उनकी कविता व्यवस्था, सत्ता और समाज की कठोर सच्चाइयों को स्पष्ट रूप से सामने लाती है।उनकी कविता ' पटकथा ' इन सबकी गवाही है यह एक ऐसी कविता है जो राजनीतिक नाटक की तरह मंच पर घटित होती है और इसमें आम आदमी सदैव हाशिए पर रहता है। भारतीय समाज और राजनीति के अंतर्विरोधों को गहरी दृष्टि से उजागर करती हुई यह कविता न केवल सत्ता की आलोचना बल्कि आम आदमी की संवेदनाओं और संघर्षों को स्वर देती है। धूमिल ने कविता को सिर्फ सौंदर्यबोध का माध्यम नहीं रहने दिया बल्कि उसे आम आदमी की आवाज बनाया। इसमें व्यवस्था के खोखलेपन राजनीति के पाखंड और आम जनता की दयनीय स्थिति को तीखे और व्यंग्यात्मक स्वर में प्रस्तुत किया गया है। यह कविता अपने कथा और शिल्प दोनों स्तरों पर हिंदी साहित्य में 'मील का पत्थर' कही जा सकती है।पटकथा में भारतीय लोकतंत्र और सामाजिक - राजनीतिक ढांचे की सच्चाई को उजागर किया गया है। यह कविता केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति नहीं बल्कि आम जनता के अनुभवों और पीड़ा कीआवाज है। इस कविता में धूमिल सत्ता, नेता,न्यायपालिका और व्यवस्था की पोल खोलते हैं। कविता का शीर्षक ही 'पटकथा' है जिसका अर्थ है किसी नाटक की रूपरेखा। वस्तुत: यह कविता एक सामाजिक, राजनीतिक नाटक की पटकथा है जिसमें जनता, शोषक और शासक अपने- अपने किरदार निभा रहे हैं। धूमिल लोकतंत्र की खोखली सच्चाई उजागर करते है हुए कहते हैं -

" जनता क्या है?
वह तो आज भी भूख से मरती है और कल भी मरेगी।"

पंक्तियां स्पष्ट करती हैं कि लोकतंत्र आम जनता के लिए कोई ठोस बदलाव नहीं लाता।
न्यायपालिका और कानून पर कटाक्ष करते हुए कवि लिखते हैं -

"यहाँ न्याय की कुर्सी पर न्याय नहीं
बल्कि हत्यारों की ऊंगली उठती है।"

ये पंक्तियां व्यवस्था के भ्रष्ट और अमानवीय चेहरे को उजागर करती हैं। कविता में सबके अपने किरदार है- जनता, नेता, अफसर, न्यायधीश जो राजनीति के मंच पर अपने - अपने अभिनय करते हैं। कविता में प्रदर्शित वास्तविकता लोकतंत्र के नाम पर सिर्फ खोखले वादे किए जातेहैं।
***जनता भूख, गरीबी और बेरोजगारी से जूझती रहती है।**
*** न्याय व्यवस्था पर सत्ता और ताकतवर लोगों का कब्जा है।**
*** नेता और अफसर मुखौटे पहनकर जनता को धोखा देते हैं।**
विश्लेषण - धूमिल की पटकथा कविता स्वाधीनता आंदोलन के आदर्शों से मोहभंग का प्रतीक है। यहां कवि ने अपने भीतर की उस ऊर्जा और उत्साह को व्यक्त करते हैं जो पहले 'आजादी' जैसे शब्द सुनकर उत्पन्न होता था। यह कविता वस्तुत: हमारे समाज के राजनीति और लोकतंत्र की विडंबनाओं का नाटकीय मंचन है। धूमिल ने इसे केवल कवि की संवेदनशीलता से नहीं, बल्कि एक दस्तावेज की तरह रचा है जिसमें आम जनता का दु:ख व्यवस्था की विफलता और लोकतंत्र की खोखली हकीकत सामने आती है। धूमिल के अनुसार - भारत का लोकतंत्र एक ऐसा नाटक है जिसकी पूरी पटकथा पहले से सत्ता द्वारा लिखी जाती है जनता इसमें केवल दर्शकहै।
. चुनाव से पहले नेता जनता से बाते करते हैं।
. चुनाव के बाद वे जनता को भूल जाते हैं।
. निर्णय जनता नहीं सत्ता और संस्थाएं करती हैं।
लोकतंत्र की इस पटकथा में:

नेता कलाकार है, संसद मंच है, जनता दर्शक है,
पुलिस नौकरशाही और न्यायपालिका
पर्दे के पीछे की ताकत हैं।

यह कविता सत्ता के इस नाटकीय चरित्र को उजागर करती है और यह समझाती है कि लोकतंत्र में जनता की भागीदारी बहुत सीमित है। धूमिल पर आलोचकों के विचार नामवर सिंह के अनुसार - ' धूमिल वह कवि है जो व्यवस्था के मर्म को सबसे गहरे स्तर पर पहचानता है।' . रामविलास शर्मा के अनुसार - ' धूमिल की कविता सामाजिक अन्याय और राजनीति विडम्बना का कठोर दस्तावेज है।' . विश्वनाथ त्रिपाठी उनकी भाषा को ' जमीन की भाषा ' बताते हैं - ' धूमिल की भाषा किसी भी सजी - संवरी काव्यभाषा से अलग है, यह जनता के मुंह से निकले शब्दों की भाषा है।' 'पटकथा' लंबी कविता है और इसमें -सत्ता, जनता, सड़क, संसद, न्याय, भाषा इन सभी पर चरणबद्ध टिप्पणी मिलती है। कविता में नेता, मंत्री, नौकरशाही, पुलिस और न्यायपालिका सब पर व्यंग है। धूमिल का व्यंग सिर्फ कटाक्ष नहीं है बल्कि व्यवस्था की सच्चाई को उजागर करने का हथियार है।

नेता वादे करते हैं, चुनाव जनता के नाम पर लड़ते हैं पर सत्ता में आते ही जनता को भूल जाते है, राजनीति में अवसरवाद, भ्रष्टाचार, धूर्तता भाषा का दोहरापन स्पष्ट रूप से कविता में दिखता है। यह कविता हिंदी की राजनीतिक - सामाजिक चेतना से जुड़ी सर्वाधिक महत्वपूर्ण कविताओं में एक है। यह कविता लोकतंत्र, सत्ता, न्यायव्यवस्था और जनता के बीच के संबंधों की वास्तविकता को बेहद तीखे और बेबाक ढंग से उजागर करती है। धूमिल पारंपरिक काव्यभाषा का प्रयोग नहीं करते बल्कि सड़क की भाषा जनता की आवाज और अनुभवों से बनी हुई अभिव्यक्ति का प्रयोग करते हैं। यही कारण है कि पटकथा एक कविता कम राजनीति यथार्थ का बयान अधिक प्रतीत होती है।

इस कविता का मूल सन्देश यह है कि भारतीय लोकतंत्र एक ऐसे नाटक की तरह है जिसकी पटकथा पहले से सत्ता, नेता और व्यवस्था तय कर लेते है। जनता केवल दर्शक होती है असली खेल मंच के पीछे तय होता है नेताओं की अपनी - अपनी भूमिका पूर्व से निर्धारित रहती है। निर्णय जनता नहीं बल्कि सत्ता का गठजोड़ करता है। लोकतंत्र जनता के लिए नहीं बल्कि सत्ता संरचनाओं के लिए संचालित होती है । यह लोकतंत्र का सबसे बड़ा विरोधाभास है - जनता लोकतंत्र की नींव है, लेकिन सत्ता में उसकी कोई वास्तविक भूमिका नहीं। कवि के अनुसार जनता को केवल भावुक बनाकर सत्ता हासिल की जाती है, और फिर जनता को भूलकर नेता सत्ता के खेल में लग जाते हैं। कविता खंडों में होने के बावजूद एक संगठित विचार धारा प्रस्तुत करती है। धूमिल अपनी कविता को एक राजनीतिक रिपोर्ट की तरह लिखते हैं - जहां हर खंड सत्ता की एक परत खोलता है। इसलिए यह केवल साहित्यिक कविता नहीं बल्कि लोकतंत्र की आलोचना का सबसे सशक्त दस्तावेज है। इस कविता में जनता की भूमिका अत्यंत विडम्बना पूर्ण रूप में सामने आती है। लोकतंत्र का मूल आधार जनता मानी जाती है किंतु व्यवहार में वही सबसे अधिक उपेक्षित दिखाई देती है और जनता से यह अपेक्षा की जाती है कि वह चुनावों में भाग ले नारे लगाए और तालियां बजाए किन्तु निर्णय प्रक्रिया में उसकी कोई वास्तविक भागीदारी नहीं होती। कविता में लोकतंत्र की इस संरचना को उजागर करते हुए धूमिल बताते हैं कि लोकतांत्रिक संस्थाएं जनता के नाम पर कार्य करती है, परंतु उनका नियंत्रण सत्ता-तंत्र के हाथों में रहता है। इस प्रकार लोकतंत्र जनता की सत्ता न होकर सत्ता की रणनीति बन जाता है पटकथा केवल 1970 के दशक की कविता नहीं बल्कि आज के समय में भी चुनावी वादे, राजनीतिक अवसरवाद, सत्ता और जनता के बीच दूरी न्याय में असमानता जैसे स्थितियां विद्यमान है इसलिए धूमिल की यह कविता आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी अपने समय में थी। यह कविता पाठक वर्ग को सजग नागरिक बनने की प्रेरणा देती है।

निष्कर्ष - धूमिल की कविता ' पटकथा ' भारतीय लोकतंत्र की विडंबनाओं का सशक्त और निर्भीक दस्तावेज है। कवि ने संसद, न्यायपालिका और नौकरशाही जैसी संस्थाओं की भूमिका पर गंभीर प्रश्न उठाए हैं। साथ ही जनता की विवश स्थिति को उजागर कर लोकतंत्र खोखली संरचना को सामने रखा है। पटकथा भारतीय लोकतंत्र की वास्तविक संरचना और उसकी अंतर्निहित विडंबनाओं को उजागर करने वाली एक सशक्त काव्य-रचना है। इस कविता में लोकतंत्र की व्यवस्था को ऐसे नाटक के रूप में प्रदर्शित किया गया है, जिसकी पटकथा सत्ता और राजनीतिक संस्थाओं द्वारा पहले से निर्धारित कर ली गई थी, जनता को केवल दर्शक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। कवि इस रचना के माध्यम से लोकतंत्र की उस सच्चाई को सामने लाते हैं जहां पर जनता के नाम पर सत्ता का संचालन किया जाता है, परंतु जनता को सत्ता से दूर रखा जाता है। पटकथा में संसद, न्यायपालिका, पुलिस और जैसी नौकरशाही जैसी लोकतांत्रिक संस्थाओं की भूमिका पर गहन प्रश्न उठाए गए हैं। संस्थाएं व्यवहार में जनता के पक्ष में खड़ी नहीं दिखाई देती बल्कि सत्ता के संरक्षण और संचालन का माध्यम बन जाती है। लोकतंत्र अपनी मूल भावना जनसत्ता से विचलित हो जाता है। धूमिल की रचनात्मक विशेषताओं का उत्कृष्ट उदाहरण है। उनकी सीधी, तीखी और व्यंग्यात्मक भाषा कविता को केवल भावनात्मक नहीं बल्कि वैचारिक रूप से भी अत्यंत प्रभावशाली बनती है। यह कविता सत्ता-विरोधी चेतना, जनपक्षधर दृष्टि और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा का आह्वान करती है। इस प्रकार 'पटकथा' हिंदी की राजनीतिक कविता में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में स्थापित होती है। निष्कर्षत: -: यह काव्य न केवल अपने समय की सच्चाई को व्यक्त करती है, बल्कि आज के लोकतांत्रिक समाज के लिए भी एक चेतावनी और मार्गदर्शन प्रस्तुत करती है।

****

संदर्भ सूची :-

1. धूमिल - संसद से सड़क तक, पृष्ठ संख्या63-68।
2. रामविलास शर्मा - हिंदी साहित्य और भारतीय समाज, पृष्ठ संख्या112-148।
3. नामवर सिंह - कविता के नए प्रतिमान, पृष्ठ संख्या 104-125।
4. विश्वनाथ त्रिपाठी - आलोचना और विचार, पृष्ठ 78- 102।
5. नागार्जुन - भस्म हो जाने दो इस संसद को, पृष्ठ 147-150।
6. रघुवीर सहाय- लोग भूल गए हैं, पृष्ठ संख्या 32-55।